जाकी असल हक निसबत

प्यारे सुन्दरसाथ जी जिनका सम्बन्ध श्री राज जी महाराज के चरणों से है अर्थात श्री राज जी के ही तन है श्री राज जी के अंग श्यामा महारानी और श्यामा जी के अंग हम सब रूहें श्री राजजी के ही स्वरूप है लीला मात्र के लिए अलग है वास्तव में दो है ही नहीं बल्कि एक ही रूप हैं। स्वलीला अद्वैत में श्यामा जी और बारह हजार ब्रह्मसृष्टि हैं।

अब निसबत की खातिर श्री राज जी महाराज ने यहां क्या क्या कष्ट उठाया। पर उन्होंने अपना इश्क निभाया। ऐसे ही जब रूहों को हक के बेशक इलम से अपने धनी का पहचान हुई तो ब्रह्मसृष्टि खेल में रहते हुए भी खेल से न्यारी हैं उसकी रहनी करनी दुनियां वालों से जुदा है। जाकी रूहों असल हक निसबत है। रूहों को सम्बन्ध की पहचान हुई तो वह हर पल अपनी धनी की यादों में ही अपना जीवन व्यतीत करती है। विरहणी श्री राज जी की अंगना जो हर पल अपने प्रियतम के इश्क में भीगी सुहागिन की स्थिति उस मछली के समान होती है जिसे पानी से निकालते ही वह तडपने लगती है। बिना पानी के वह अपने जीव की भी समाप्त कर देती है। जैसा कि वाणी में भी फुरमाया है।

विरह गत जाने सोई, जो मिलके बिछुरी होय।
जो मीन बिछुरी जल थे, या गत जाने सोय।।

श्री राज जी ने नूरी तनों को अपने चरणों तले बिठाकर खेल दिखाया। क्योंकि स्वयं श्री राज जी भी चाहे तो अपनी आत्माओं को अपने से जुदा नहीं कर सकते।

कोई काम हक से न होवहीं, ऐसा न कहियों कोय।
पर एक बात ऐसी बका मिने, जो हक से भी न होय।।

और यहीं कारण है कि जैसे ही श्री राज जी ने ब्रह्मसृष्टि को सुरता की खेल में उतारा निसबत के वास्ते रसूल साहब को भेजा। अपनी रूह श्यामा महारानी को भेजा और फिर स्वयं भी आये और तन बदल बदल कर रूहों को आकर जगा रहे हैं। ताकि उन्हें उनके स्वरूप की पहचान हो सके? आकर अपनी निसबती रूहों की सिफत स्वयं अपनी जुबां से कर रहे हैं।

लाड़लिया लाहूत की, जाकी असल चौथे आसमान।
बड़ी बड़ाई इनकी, जाकी सिफत करे सुभान।।
निसबत वास्ते खेल बनाया

बेशक इलम ये वाणी ल्याये हादी रूहों की बराबरी में कोई निमुना हो तो कहें समझाने के लिए सूरज, सूरज की किरणें सागर और सागर की लहरें कहा है। ऐसे मोमिनों की सिफत अक्षर ब्रह्म भी नहीं कर सकते।

ए निरने करना अर्स का, तिनमें भी हक जात।
इत नूर अकल भी क्या करे, जित लदुन्नी गोते खात।।

अपनी प्यारी निसबत की खातिर वाणी में यूं फुरमाया भी

Nijanand App

सो इश्क इलम सुख सागर, वास्ते आय निसबत।
तो निसबत के तौल कोई, ल्याऊं कहां से न्यामत।।

वो निसबत खेल में खिलवत के सुख भूल गई।

रूहें भूलियां खिलवत खेल में, ताथे रूह अल्ला इलम ल्यावत।
सो कायम करे त्रैलोक को, जो असल हक निसबत।।

रूहों को इस खेल में श्री राजी महाराज ने ऐसी शोभा दे दी कि चौदह लोकों के जीवों की मुक्ति अर्थात इन्हें अखण्ड कायमी रूहों से ही मिलेगी। धनी ने तो खेल में आशिकी निभाई। खुद को भी रूहों पर वार दिया। इसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता रूहें इसे समझ सकती हैं क्योंकि इनके दिल में श्री राज जी की बैठक है। जहां श्री राज जी की बैठक है वहीं जोश हुकम, मेहर, इलम सब साथ है।

पहचान होने के बाद से अक्षरातीत अपनी निसबत से सम्बन्ध होने के कारण से अक्षरातीत के वासी की तरह दुनियां से न्यारे होते हैं। जब तक धनी मिल नहीं जाते माया में उन्हें इक पल का भी चैन नहीं। श्री राज जी रूहों के बिना और रूहें अपनी धनी के बिना नहीं रह सकती।

रह न सकू मैं रूहों के बिना रूहें रह न सके मुझ बिन।
जब पहचान वाको हो वहीं तो सहे न विछोहा खिन।।

जिनकी धनी से निसबत है उनके दिल में धनी की मूरत है। उनके दिल से धनी की मूरत कभी नहीं हटती।

अरवा आसिक जो अर्स की, ताके हिरदे हक सुरत।
निमख न न्यारी हो सके, महबूब की मूरत।।

रूहों का अपने प्रियतम से कैसा नाता है
वाणी में इसे फुरमाया है

हम अरस-परस है हक के, ए देखो मोमिनों हिसाब।
हम हक में हक हममें, हक बिना सब ख्वाब।।

सि० २/१२

जब तक भूली है रूहें, दोष नहीं जब हक इलम से जग गयी तो फिर श्री राज जी का दीदार ही खाना पीना और बन्दगी होती है।

करना दीदार हक का, एही मोमिनों ताम।
पानी पीवना दोस्ती हक की, रूहों एही सुख आराम।।

इस खेल में धनी की वाणी उनके वचनों उसमें छिपे गुझ भेदों अर्श की बारीकियां और परमधाम के अखण्ड सुख की बातों को वहीं पहचानेगी। जिसकी असल निसबत है निश्चय ही वह बड़े भाग्यशाली है क्योंकि वह हक की जात है।

अर्स जिमी नूर अपार है, इतके वासी बड़े बखत।
महामत रूहें हक जात है जाकी हक कदमों निसबत।।

सि० प्र० चौ० ८/८४

Nijanand App

जो न्यामतें धनी रूहों की खातिर ल्याए है।
उन सुखों को निसबती रूहें ही लेगीं।

रूहें सुपने दुनी को न लागही, जाको मुरदार कही हजरत।
ए कदम क्यों छोड़ही, जाकी असल हक निसबत।।

सि० ८/१६

वो अक्षरातीत पारब्रह्म जो आज तक कभी इस दुनियां में नहीं आए। अब निसबत खातिर आए। इस खेल में श्री राज जी के सुख श्यामा जी, रूहें ही लेंगी।

सुख हक का महामत जानहीं, या जाने मोमिन।
दुजा नहीं कोई अर्स में, बिना बुजरक रूहन।।

परि० ११/८२

चरण रज
श्रीमती कंचन आहूजा
जयपुर

संवेदना-संदेश

परम आदरणीय श्री भागमल जी खुराना, देहली जीवन के ८५ वर्षों तक काल माया की सुख-दुख की लीला को देख दिनांक १० दिसम्बर ९९ को इस मोहरूपी संसार से सदा के लिये विदा हो गये। आप शिक्षित, अनुभवी एवं योग्य व्यक्ति थे और भारत दर्शन के साथ-साथ आप को ईरान व इराक की विदेश यात्रा करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। आप अन्य समाचार पत्रों के साथ-साथ धाम-दर्शन के भी नियमित पाठक थे और सम्पादक (ज्येष्ठ दामाद श्री गिरधर जी) को समय-समय पर मार्ग दर्शन किया करते थे। आपकी प्रार्थना सभा में बड़ी संख्या में बुद्ध जीवी शामिल हुये और परिवार की ओर से अन्य धार्मिक संस्थाओं के साथ श्री प्राणनाथ मन्दिर, पीतमपुरा के लिये भी ११००/- की न्योछावर दी गई।

धाम-दर्शन परिवार उनके पुत्रों यशवीर खुराना, रवि खुराना, पुत्र वधुओं रेखा व वर्षा और बेटियों श्रीमति पुष्पा गिरधर, राज पंछी, आदर्श अरोड़ा, चन्द्रसूद व शारदा मागो एवं समस्त खुराना परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है व धाम-धनी से उनकी आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना करता है।

Nijanand App